

मौक्तिक.

सम्पादक
मूलचन्द्र 'प्राणेश'



प्रकाशक
राजस्थान साहित्य अकादमी के सहयोग से
भारतीय विद्या मन्दिर शोध प्रतिष्ठान
बोकानेर (राजस्थान)

● प्रकाशक

राजस्थान साहित्य अका. को सहयोग से
भारतीय विद्या मन्दिर शोध प्रतिष्ठान
बीकानेर (राज०)

अनुक्रमणिका

	प्रकाशकीय	७
	प्रावचन	८
	श्री ओम केवलिया	
	—घरती की छगडाई	२०
	—सोए राग जगामो साथी	२२
१	श्रीमती कमला वर्मा	
	—एक स दचिन	८४
	श्री का ह महर्षि	
१	—छवो उड म्हाारा नवल तिरगा	३०
१५	—आ रहा नूतन	३१
	श्री चचल हृष	
१	—ओ मेरे देश	१३
१	—भारत माता की सतान	१६

	श्री जुगलमिह खीची	
२११	— है सुन्दर सगार	७४
१	श्री दीनदयाल ओझा	
	— माच री जोत	६३
	— पभिनव शृगार	६५
	श्री घनजय वर्मा	
	— जार्म सोयो पान जी	७७
	श्री तुलाकीदास बावरा	
	— गाव	२७
	— दीपक सा जलता प्रतमा	२८
	श्री भवरलाल छजलानी	
	— सब जनतत्र री बारी है	६३
	श्री भवरलाल सुथार 'अमर	
	काम करो	८८
	श्री भरत व्यास	
	— बाहू रे म्हारा डोकरडा	४४
	— पन्वीस वष	४६
	भवानीशकर व्यास 'विनोद'	
	— खेनना री स्वतावणी	५५
	— बगला देश का जन्म	५६
	। मकबूल अहमद अमिताभ'	
	— रीशत्रु माता री नाच करो	८३
	डा० मनोहर शर्मा	
	— बूढो भारत	३३
	— स्वाधीनता री सुख	३५
	श्री मालचन्द खडगावत	
	— स्वाधीनता रजत जयती वष	८०

श्री भूलचन्द 'प्राणेश'	
— भावो प्राणा प्राणमिषत ऊगावा	६५
श्री 'मोहन' आलोक	
— गांधी की लाडली	५२
श्री मोहम्मद सदीक	
— आजादी	३६
श्री योगेश्वर 'मनुज' राजस्थानी	६७
— घटनाओं के फल	६७
श्री रामदेव आचार्य	
— नित राजस्थान जियो	७५
श्री रामनाथ व्यास 'परिकर'	
— लारला पच्चीस वष	४७
श्री वल्लभेश दिवाकर	
— बोलो जय जय भारती	६२
श्री प० विद्याधर शास्त्री	
— लक्ष्यम्परम्पावनम्	११
श्री विशनलाल मतवाला	
— घरती हिन्दुस्तान की	१७
— चलना है भगारों पर	१६
श्री शम्भूदयाल सकसेना	
— भारत गीत	११
श्री शिखरचंद्र कोचर	
— तुम बढ़े चलो हे नौजवान	८६
श्री शिव पाडे बीकानेरी	
— हेमाळो	२५
श्री शिवराज छगणी	
— सम भागतो जावे	७०

—माघद भागा र मरजणहारा र नाव	७१
श्री श्रीगृहण विदनीई	
—महारा देग	२३
श्री मरुल विशारद	
—गो कवितावा	७८
श्री सावर दईया	
—गुरुशा क सम्भ में	४१
श्री सूर्यशंकर पारीक	
माजादी री ऊबी गानी	३७
श्री हनुमान पारीक	
प्रहरी श्रीर तुम	८५

प्रकाशकीय

१। 'मौक्तिक' का यह प्रकाशन सोद्देश्य है। आजादी के पंचवीं वर्ष पूरे होने पर देश में देश भक्ति और सजनात्मक प्रवृत्तियों का रूप रंग देखना और तत्संबंधी गहरी अनुभूतियों की अभिव्यक्ति महंज साँमा य बातें हो गई है। इसी सिलसिले में इन कविताओं का यह संकलन किया गया है। इनमें कई प्रकार के स्वर मुखर हुए हैं। दिशा-निर्देश भी हैं और बदलते हुए समाज के प्रति आस्था भी। नई प्रतिभाएं अपना नया रंग लेकर आई हैं। जो पुगने हैं, उनकी भजी हुई, परिष्कृत भावनाएं नई पंथों का संबल बनगो, दोनों ही वरेण्य हैं।

मेरे महंकों श्री मूलचंद्र 'प्राणेश' ने जिस तत्परता और निष्ठा के साथ यह संपादन काय किया है वह सराहनीय है। श्री सूर्यशर्कर पारीक ने प्रार्थकषन लिखकर इसका वजन बढ़ाया है और कवियों का महो परिप्रेक्ष्य में परिचय कराया है।

अकादमी ने अपनी संबद्ध मस्यार्थों को यह काय अपने अपन क्षेत्रों के लिए सौपा था। पाच सौ रुपये की धनराशि प्रस्तुत सकलन के लिए थी है। हम उनके बडे आभारी हैं।

बीकानर

गणतंत्र दिवस (१९७३ ई०)

सत्यनारायण पारीक

सचानक

प्राक्कथन

मौक्तिक हिन्दी एवं राजस्थानी कविनामों का सुंदर सङ्गणन है। इसमें तेतीस कवियों की ४४ रचनाओं को समाविष्ट किया गया है। हिन्दी की २३, राजस्थानी की २१ एवं संस्कृत की १ रचना इसमें स्थान पा सकी है। इसमें अधिकांशतः उन कवियों की रचनाओं को स्थान दिया गया है जो या तो बीकानेर क्षेत्र के मूल निवासी हैं या जिन्होंने अपना काम क्षेत्र इस क्षेत्र को बना लिया है।

इसमें सम्मिलित प्रायः सभी कविनामों का विषय राष्ट्रीय भावों के ह्यात्मक अनुभवों से प्रलङ्घित है। राष्ट्र की जाति के लिए तथा बराबर उन भाव को सजग बनाय रखने के लिए ऐसी राष्ट्र भक्तिपूर्ण कविताएँ जनमानस में उस भाव संस्कार का सदैव बीजारोपण करती हैं। सामाजिक चेतना के लिए भी ऐसी कविताओं का मूल्य बराबर बना रहता है। इसमें सम्मिलित कतिपय जिन कविताओं का राष्ट्रीय भावों से अतिरिक्त भाव बोध होता है मूलतः उनका भी राष्ट्रीय भाव पोषण करने का भाव ही है। चाहे वे मानवतावाद का परिपोषण करने वाली हैं और चाहे वे राष्ट्र भाषा हिन्दी का समर्थन करने वाली। कुछ कविताएँ वर्तमान समय को व्यक्त करने वाली हैं जिनमें आक्रोश प्रयत्न शब्द का तीव्र स्वर है तो कुछ कविताओं का स्वर सुखद भविष्य की मधुर कल्पनाओं से समन्वित है। ऐसी कविताओं में आशा और विश्वास के स्वर अधिक मुखरता पा सकते हैं। कुछ कविताएँ बगला देश जसी जीवित घटनाओं का चित्रण करती हुई, नजर आती हैं। उनमें वीरता की दुहाई बलिदानों की प्रशंसा एवं राष्ट्र को सहा सदा के लिए आज़ाद देखने की तीव्र कामना है। समन्वयवादी स्वर भी इन कविताओं में अपना निराला स्थान रखता है। हिन्दू हैं तथा तथा और मुसलमान हैं तो क्या अतः सभी भारत माता की सतान हैं। तब भेद भाव कैसा? गीता और कुरान उसी एक चिरंतन सत्य का ही तो बोध कराते हैं। जहाँ इस दंग के रक्षक अजुन भीम जैसे धीर-वीर बनवाने रहे हैं उसी के रक्षक अखुन हमीद कीलर और खैतानसिंह जैसे निभय और अट्टिग वीर रहे हैं।

यह शीघ्र की घरती है। यहां क्रांतियां पलती रही हैं। जीवन की बाजी लगाकर भी इस की रक्षा रखना है—जय विजय के स्वर का सघोल करता है। यहां क कवियों ने सद्व सिधु रागा का आलाप किया है। मोक्षिक का कवि भी बलिदानों की महिमा का बखान करता है—

तन मन धन सब करे न्यौछावर, चादर स्वामिमान की
वीर प्रसविनी धराभुष्य, यह घरती हिंदुस्तान की।

भारत की पुरातन परम्परा है कि वह किमी की उजाड़ता नहीं बल्कि बसाता है, जुल्मों का प्रतिहार करता है। प्रमा पिछले दिनों जब मानवता के हथारों ने (बनमान बगला देश में) कहर लाहमा शुरू किया तब हमारे देश ने ही उन पर गाज पटक कर गाजी को हुंवाया, नियाजी का भुजाया और मानवता को पुन प्रस्थापना की—

आपने कितने घर उजाड़े हैं

हमने उजाड़े हुए बसाये हैं

तुमने बोये हैं पेड़ काटो के

हम तो फसले बहार लाए हैं

और तभी 'मोक्षिक' का कवि आजादी को हासिल करने वाले का अभिनंदन करता है और कहता है—

शतानो के—जबड़ो मे से लाई जाती है आजादी

मस्तक का मोल चुकाकर के पाई जाती है आजादी

X X X

जो खून सहोद बहाते, बसका पार नहीं हो सकता है।

मा बहिनी का बलिदान कभी, बेकार नहीं हो सकता है

यह देश हमेशा से लड़ना मरना और मरना जानता है परंतु

हार मानना नहीं जानता। यह घरती वीर प्रमूना है। उस पना में वीरत्व

है। यहां घरती का मोल माया देकर चुकाया जाता है। यह कवि आजादी

के प्रतीक विरगा में शहीदों का दर्शन करता है। साथ ही कर्क को इस बान का

पश्चात्ताप भी है कि जो भारत अने पूरे परिवार का मानिक है किंतु उमकी

सतान् भुखी नहीं है। स्वाधीनता और पराधीनता में अंतर है किंतु उस

शासक और इस नामक की मौज मस्ती में कोई अंतर नहीं है।
 पराया और यह स्व है। मौक्तिक का कवि आज की छवना और प्रवचन
 से भी अत्यंत दुखी है। इयामगट्टो एव पोस्टरा पर आदश वाक्य लि
 हुए हैं कि-तु काय उनके विपरीत किया जाता है। कवि गांधी का सध
 स्मरण करता है और उनके अनुयायियों पर व्यंग्य कि वे उनके आदर्शों पर
 कितना चलते हैं। और इसीलिए एक कवि ने इस बात की मत्सना की है
 कि जिस राष्ट्रभाषा द्वितीय को महात्मा गांधी चाहते थे वह अपने ही घर
 में प्रवामिनी हो रही है। और इसीलिए एक कवि ने माघ भासाईं सिर
 जणहारों र नांव अपने विचारों को अभिव्यक्ति दी है। 'मौक्तिक का कवि-
 जहां प्रकृति बणन में अपनी अनुरागात्मकता रखता है वहां वह सभी के लिए
 मंगल कामना करता हुआ भी दृष्टिगोचर होता है— मरणों की भूष जियो,
 जिण आजादी न काम राखी बा तरवार जिणे बीरों की बडक जियो'
 और मार्गों की घास जियो जैसे प्रयोग हृदय में समोहन उत्पन्न करते हैं
 तथा बानों का सरस।

इसीलिए हम धरती का मोन घनमोल है—
 ई धरती रो माल आवल दुममीरी आवात नही
 रगत सीच रहे बेल बघाई, कीरी घोयी बात नही
 यहां का कोई कवि इतिहास रचने की सुन्दर भावामिव्यक्ति करता
 है तो कोई यह माघिकार कहना हुआ भी मुनाई पटना है कि आजादी
 प्राप्ति के बाद जो जो बाण हमारे दग में हुए है, वे कम नहीं हैं। आज हम
 अपने परों पर सड है कि-तु कवि यह भी स्वीकार करता है कि अभी घोषण
 में मूर्ति पाना है। कोई कवि जोन के लिए मरना साधा का पाठ पढ़ता है।
 कोड कह रहा है—नारायणी निरघक है यमनिष्ठ बनो। किमी कवि के
 स्वर में निरंतर गतिनीमना का आग्रह तो किमी को अभीष्ट है—
 कण कण से आवाज आ रही, हमें चाहिए एकता
 मौक्तिक का एकमात्र मस्तक कवि अनेक मंगल कामनाओं के माघ
 उद्घोषण के स्वर में भाग जीवन के त्याग की ओर मकन करता है। तो
 कोई यहां राष्ट्रभाषों के माघ प्रकृति मस्तक क गीतों का उद्गाता बना हुआ
 है। किमी किमी कवि का स्वर सभी भावों का बादन करता नजर आता।
 इन मौक्तिक हम प्रकार सधु मकन होता हुआ भी अपनी अपनी दि...
 व कवियों के भावभाव का प्रतिनिधित्व करता है।

—सूर्यशंकर पारीक

लक्ष्यस्परम्पावनम्

स्वातः स्वखलुभारतस्य जगता
 स्वातः स्वपरक्षाकरम्
 सर्वेषां हितसाधकम्प्रतिपदम् ॥
 विश्वात्मस्य तपणम् ।
 नित्यं निश्चयमोन्नतिं जगति सा
 सद्भिर्जनैर्गण्यते ।
 लोकानां हि सुखस्थितिं वतयेया
 जायेत दुःखाविता ।

लोकेऽस्मिन् परिपूयते परमिदं
 लक्ष्यं हि नतत् स्वतः
 नित्यं यस्यकृते तपो मुनिवरैः
 पूर्वं कठोरकृतम् ।
 स्याज्यसम्प्रति सौख्यवृत्तिजनकं
 भोगात्मकजीवनम्
 तत्तत् माध्यमुसाधनाय सततं
 स्येयमुसज्जेस्वथा ।



भारत-गीत

सरिताओं का पेश हमारा यही हस होते हैं
 यही ओढ़ कर हिम की चादर गेन शिखर साते हैं
 किरणों का किरोट भाथ पर यही वन घरते हैं
 पुष्प राशि से लता कुज सब यही गोद भरने हैं
 झरनों के अविरोध प्रपात में करती स्नान गिलाए
 यही बठ दो घड़ी जगत में हम मन प्राण जुडाए
 कमल कुमुद से भरे सरोवर तारा छाई राते
 यही चन्द्रकर शिगिर कणों से करते चुपचुप बातें
 यही इन्द्र धनु रगता दुलभ मेघा की मनुहार
 स्वमन बंसा कुजों में गाता मोठी मज मलारे
 ऋषि-मुनियों की पुण्य भूमि यह मृग मारो का घर है
 पल पल मंदिर, प्रति मंदिर गुचि लिये दत्तता वर है
 विश्व वद्य यह दश कि जिसके सागर चरण पक्षार
 मध्याए आरती उतारे, शुक्ल दीप कर धार
 माम गान था हुआ यही पर मोम पान कर करण
 इसी दग के बरह-पत्थर से गंगा जल ढरक
 उपनिषदा की इसी भूमि में घम-वम पूने
 समृति भूजो यही डाल कर ऊने-ऊने भूने
 मानृभूमि का गौरव गिरि मा वेद पुगण पुरातन
 दिमक हृष्य-स्नात से कलकल बहना अविरोध जीवन



ओ मेरे देश !

ओ मेरे देश
मेरे जीवन
मेरी मुस्कान
तू मेरा सब कुछ
मेरे अभिमान ।
बह रही शीतल हवा
मिला आमोद
अडिग हिमगिरी
रक्षक खडा विशाल
और दैत्याकार
भाखडा'-नागल'
'चबल' बाघ
तुझ में ही
अविराम चलती
गंगा की पावन लहर

कर स्नान जिसमे
 भक्त के
 क्लेश जाते बिखर ।
 और कही
 राजधानी स कुछ ही दूर
 यमुना किनार
 'ताज' की है गोद
 स्नेह है तुमसे
 मिला मुझे अगाध
 तरे ही वश पर
 भिलाई- चित्तरजन'
 आदि कल कारखानो की
 चिमनियों स निकलती
 थम की धूप
 आ मेरे देग
 तरे हैं विविध रूप ।
 हास्य दान
 सब कुछ मरा
 तुम्ह प कुरवान
 आ मरे देग
 मगे मुम्हान
 तू मेरा सब कुछ
 मर अभिमान ।
 निवम हा या हो अघेरी रात
 बम मुझे के वन
 नरा ना ध्यान

हैं कोटि कोटि
 तेरी सतान
 'अजु न' 'भीम'
 धीर वीर बलवान
 गाधी'- गौतम'
 नेहरू' के अरमान
 पाट कर भेदभाव की खाई
 टटा रहे ऊच नीच की
 दीवार ।
 आज भी पौरुष,
 नहीं भुक्त पाया है
 जागता है हर खेत पर किसान
 और सीमा पर
 बफ से दबो
 घाटियो मे
 हर घडी चौकस खडा है
 'अब्दुल हमीद', 'कीलर' —
 'शैतान सिंह' बन कर
 निभय—अडिग
 तेरा हर जवान
 ओ मेरे देश
 मेरे जीवन, मेरी मुस्कान
 तू मेरा सब कुछ
 मेरे अभिमान ।



भारत माता की सतान

हम हि दू हम मुसलमान भारत माता की सतान
नही जानते भेदभाव हम सज्जा हम करते मग्मान
गाधी'— गौतम की भूमि पर

प्यार सदा पलता है
सत्य अहिंसा लिय अडिग

यह स्नह दीप जलता है
मंदिर मस्जिद— सभी एक हैं
गीता वही और वही कुरान
हम हि दू हम मुसलमान
भारत माता की सतान

कितने युग बीत और आये
फिर भा हम बलशाली
गंगा यमुना की धरती पर
ईद वही और वही दिवाली
एक सदा है मजिल अपनी
होठो पर खिलती मुस्कान
हम हि दू हम मुसलमान
भारत माता की सतान।

धरती हिन्दुस्तान की

वीर प्रसविनी धरा पुण्य, यह धरती हिन्दुस्तान की ।
लुटना हो गर गौरव इसका, वो बेला अभियान की ॥

ओ भारत के वीर सपूतो !
अपनी निद्रा त्यागो,
शत्रु द्वार पर आ जाये तो
जाग, जगाओ, जागो,

यह वह धरती है जिसके खातिर, बाजी खेती प्राण की ।
वीर प्रसविनी धरा पुण्य, यह धरती हिन्दुस्तान की ॥

तुम सब वे हो जि हाने ही,
 इस की धान रखी है
 काट जुल्म की सीमाण,
 अपनी शान रखी है,

बोल उठे सब कोटि-कोटि स्वर जय-विजय सतान की ।
 वीर प्रसविनी घरा पुण्य यह धरती हि दुस्तान की ॥

यह वह घरा है जहा वीरो ने
 सबस्व अपना त्याग दिया
 भारत मा के चेटो ने-
 जिस के हित बलिदान दिया

तन मन धन सब करे यौद्धावर चादर स्वाभिमान की ।
 वीर प्रसविनी घरा पुण्य यह धरती हि दुस्तान की ॥

आतकित जब हुई घरा तो,
 फली जौहर ज्वालाए,
 जोश म आए बच्चे लेकर-
 कुर्बानी की मालाए,

परवाह नही तब करत कोई, भले बुरे अ जाम की ।
 वीर प्रसविनी घरा पुण्य यह धरती हि दुस्तान की ॥



चलना है अगारों पर..

चलना है हमको जलते अगारो पर

राहो मे काटे बिछे, आघिया आए
हम शूरवीर तूफानो मे मुस्काए
यह शीय की घरती, यहा जातिया पलती
तम नाशक की ज्वालाए, नित यहा पर जलती
जिम्मेदारी है आज कणधारो पर
चलना है हमको जलन अगारो पर

है कौन घरा पर हमे रोकने वाले
हम घोर वीर हैं अल्हड मत वाले
हममे सागर सी है अथाह गहराई
नदियो सी गतिमान जि दगो पाई
अभिमान हमे है सद सस्कारो पर
चलना है हमको जलते अगारो पर

हम देश प्रेम मे प्रीत प्रीत दिल वाले
हर कदम कदम पर तूफान उठाने वाले
हम जल्लादो को मजा चखाने वाले
हम अभिमानी को घून चटाने वाले
विश्वास नहीं हमको मिथ्या नारो पर
चलना है हमको जलते अगारो पर ◆

धरती की अगड़ाई

इस घरा न ली जो अगड़ाई
आसमा ने ये फून बरसाए
जब सिपाही बढे थे सरहद पर
चाद तारे भी देख मुस्काए ।

लहरें उठती थी गंगा यमुना म
किसन रोका है उस खानी को
देश पर जो जान दते हैं
सिर भुकाया है उस खानी को ।

कितने डूबे जहाज पानी में
क्या हुआ हाल तेरे 'गाजी' का,
कितनी फौजों ने हार मानी है
सिर झुका दिया 'नियाजी' का ।

हो मका जितना हमने समझाया
आपके ही ये जुल्म सारे हैं,
कितनी मासूम इज्जतें लूटीं
कितने वीरान ये नजारे है ।

आपने कितने घर उजाड़े हैं
हमने उजाड़े हुए बसाए हैं,
तुमने बोए हैं पेड़ काटो क
हम तो फसले बहार लाए हैं ।

अब भी वक्त है सम्भलने का
इस हकीकत को आप पहचानें,
अकल अपनी ही काम आती है
इस सदाकत को आप गर जानें ।



सोए राग जगाम्रो साथी

मपनो म क्या खो जाते हो
विपदा म क्या घबरात हो
बुझत दीप जलें क्षण भर म ऐसा साज प्रजाप्रा साथी
सोए राग जगाम्रो साथी ।

क्यो चलते हो तुम मन मारे
साते हा क्यो पाव पसारे
अगर वेदना छा जाए तो दुबलता मत लाग्रो साथी
सोए राग जगाम्रो साथी ।

तुम गाओ तो घरा गगन हिल जाए
भूले भटके राही को मजिल मिल जाए
रुको नही तुम बढे चला अब महम्यल को सरसाओ साथी
सोए राग जगाओ साथी ।

कम - क्षेत्र से हटो न राही
मजिल दूर नही है राही
अधकार का चीर बढो तुम, भारत स्वग बनाओ साथी
सोए राग जगाम्रो साथी ।



म्हारी देश

श्री दिन भाग म्हारी
हू ई देश रो जायो
म्हान इण भोम सू घणो हेत
गाऊ तेजो, बीजू खेत
भाग मनाऊ
दो दिन वणै आवै
इण रै खातिर
प्रा म्हारी लाडी जान जावै
इण मायड रा लाल
इण रै खान्तिर
बणिया काळ ।

इण जुग रो इतिहास बणायो
पृथ्वी' से इदिरा' तक आयो

इण भारत रो माण
सारै जग छायो
इण वीरा रो गान
सारे जग गायो
जो आयो शरण म ई रो

बो बणाग्यो तन - धन रो सीरी
जव बिलखतडा देख्या टाबरिया

इण मायड रै थण सू
दूधा रो घारा बहग्यो
भारत मा र आग
जिण न शीश भुकाया
रोटी कपडा माण
सभी कुछ पाया
पण जिण रो मन खोटो,

मनसोबो खोटो
वार तो रहसी—स्वर्गा ही टाटो



हेमाली

भारत रे वच्चे वच्चे नै, श्री प्राणा स्यू प्यारो है ।
भुवषा न भुकसी हेमाळो श्री राजस्थानी नारो है ॥

लडणो जाणा मरणो जाणा
अर जाणा हा मारणो
दुममण री छाती चढ जाणा
पण ना जाणा हारणो

म्है राणा सीवाजी, म्हारो खून घणो खारो है ।
भुवषो न भुकसी हेमाळो, श्री राजस्थानी नारो है ॥

ई १ नागनिघ की सगरी
 द ग'ट्टपां की ताडगां
 पौमाना हावां म्गू म मिन
 बीरा प्राण रिवाटसा

काममीर मागे ग रिजिया श्री शंभ्यां रा तारा है ।
 भुवपा न भुवपा हेमाळा श्री राजस्थानी नारी है ॥

इण धरता र पाणा म हा
 , योर वणै रो जाण है
 जनम गूरवा न दव नित
 आ योरां की साण है

मोनडल्या द माल चुकाव श्री मिनता रा धारा है ।
 भुवयो न भुवसा हेमाळा श्री राजस्थानी नारी है ॥

घणगिणती रो बुरवानियां ही
 राखी इण री लाज है
 हिंदू मुगलिम गिख इगार्ई
 स रै सिर गे ताज

ओ भारत गी डाल इये न सब धरमा रो सारा है ।
 भुवपां न भुवसी हेमाळा ओ राजस्थानी नारी है ॥



गाव

आ गावडले री बात, बावळा, चमक चादणी रात
 कोई गीतडलो गावँ रे, मन भरमाव रे
 कुडक कुडक कोई कीयर तवँ खोली काँडे रे
 भरिया खेळी कोठा माथे, छागा लावँ रे
 पावँ ऊठ बकरडो गाय, गोवि दो गाडीणा ले जाम
 तुगाया लाखो गावँरे, मन भरमाव रे
 आ गावडले री बात ---

ऊची ताण मचाण, गोफणी बावँ ह्याळी रे
 बाडा सिगली छाव, कर खेता रुखवाली रे
 पिऊजी छाछ गवडो खाय, गौरडो मन ही मन मुळकाय
 धू घट मे सरमावँ रे, मन भरमावँ रे—
 आ गावडले री बात .

धान भरी छाटघा न देख, टावरिया नाच रे
 अमल गळतो देख, गौरडो भँदी राचँ रे
 भूम लोग लुगाया-भार मनावँ दीयाळी त्योहार
 भिंग भिंग ज्योत जगावँ रे, मन भरमावँ रे
 आ गावडले री बात, बावळा चमक चादणी रात
 कोई गीतडलो गावँ रे, मन भरमावँ रे। ◆

दीपक सा जलता अन्तरमन

दीपक सा जलता अन्तरमन
साधक सा पलता ये जीवन
मैं पला बूटी के आगन में महला की किंचित् चाह नहीं
गूल सहारं मेरे मुझको फूलों की परवाह नहीं
जो पतझर को पमाने दे, बेजुबा धरा को गाने दे—
औ बिकी बहारों की बगिया तक, रुकते जिनके पाव नहीं
मैं उनकी सासों का सरगम
दीपक सा जलता अन्तरमन

मेरे तप का मूरज तो, हर ग्रह मे गौरवशाली है
इम घग्ती के पात्र सभी, तारो से वैभवशाली है
जा बलहीनो को सम्बल दे, मा वसुधरा को 'चम्बल दे
घ्री सावत दे दे उन पडो की, जिनकी जजर डाली है
में उनके सपनो का सावन
दीपक सा जलता अ तरमन
साधक सा पलता ये जीवन

वो मेरे सग क्या चल पायें, जिह किनारे भाते होंगे
वो मेरे सग क्या चल पायें, जा भक्ता से घररात होंगे
जो तूफानो से खेल सके, जो बडवानल का भेल सके
ओ'राह नही मिलने पर, खुद, अपनी राह बनाते हो
में मेहनतकश का मन भावन
दीपक सा जलता अ तरमन
साधक सा पलता ये जीवन ।



ऊ चो उड म्हारा नवल तिरगा

ऊ चा उड म्हारा गवन तिरगा लहर लहर म्हारा गवन तिरगा
ऊ चा उड म्हारा त्रिजयो शण्डा
छपन ऩाड थारा गुण गावै ।

थार तार-तार म लासू अमर गतीद निजर आवै
गाधी, तिलग कवीश रवी तर हृळ्ळ मूळ्ळ मन हरभाव ।
आखा जग थारा गुण गावै ।

मा र घाळ दूध मरीला, घाळा रग रग लाव
अमन चन रा शख बजा कग जीवण जोन जगा जावै
आखा जग थारा गुण गावै ।

हमी सुमी हरियाली हारयो नु वो मदेशो मन भावै
हरित ऋति रा मू था हीरा हळ सू खोई सो पावै
आखो जग थारा गुण गावै ।

जननी जलमभाम री ममा है ऊ चो आ ममभावै
देस धरम री आण बाण पर कसरिमा भल अण्णावै
आखो जग थारा गुण गावै ।

चक्र सुदशन परम तेजरो बुद्धि मे बळ बरसावै
गरज वीर सुण जद गीना रण जीतै, जग जस छावै
छपन ऩोड थारा गुण गावै । ◆

आ रहा नूतन

धैर्य धर, सन्निकट निश्चय ही सवेरा
 क्रूर कर्मा कृष्ण वदना क्षीण त वो
 यह तमिस्रा सास अतिम गिन रही है
 तरुण प्रेता की जबानी, राज मत्ता
 देख वह प्रतिक्षण निरंतर छिन रही है
 क्षय-तमीचर तारकाओ की प्रभाए
 आसुरी माया विगत, मृततम सपेरा—
 धैर्य धर, सन्निकट निश्चय ही सवेरा ॥ १ ॥

जो यहा स्थाणु स्वय को मान बैठे,
 देख तो भू कम्प उनके आसनो मे
 बदलते क्या देर लगती, चल जगन मे
 मिट रहा इतिहास, बदलते शासनो मे
 जो मरुत के साथ, वह कसे अचल है !
 क्रांति-रथ के चक्र का ही प्रथम फेरा—
 धैर्य धर सन्निकट, निश्चय ही सवेरा ॥ २ ॥

पमित की उर घायल स्वर की गीत श्रुतिगो —
 श्रवण म श्रुतिगो श्रुतिगो श्रुतिगो
 पलटत परमात कुस्मित कामना म
 तित नए हान घमित श्रुतिगो प्रकाश
 पर त म तम य सजामी माध्याम
 प्रसट शाना तपत जसता तमग धरा —
 धय धर सन्निकट निश्चय ही सवेरा ॥ ३ ॥

फटफटाता पन सग कुल बालिकाए
 ममरित भुरमुट मरत तह ताह सार
 कुररी कण्ठा १ घलापा राग भरव
 ताम्रचूडो १ मटन लुप्त पत्तोच्चार
 घुल रहा नभ रक्त धारा के सलिल म
 दिग दिग तो म भगा जाता अधेरा
 धय धर सन्निकट निश्चय ही सवेरा ॥ ४ ॥

एक सरसी क निगामी सहज साथी
 कमल विकसित कुमुत् लु टित गत विभव है
 उल्लुझा चमगादडा क पलक भ्रुवके,
 कयोकि नवयुग सजना का यह प्रसव है
 आ रहा नूतन जहा तू मैं न मरा —
 धय धर सन्निकट निश्चय ही सवेरा ॥ ५ ॥



वूढो भारत

लाठी रँ स्हारँ
घूँजतो घूँजतो
सटक सू परँ
यो डोकरो
चाल्या जावँ है
चुपचाप ।
इ रो माथो
क्यु तो बुढाप सू
अर क्यु चिन्ता सू
भुक्खाडा है ।
यो याद करँ है
आपर उएँ दिना न
जद यो जुवान हो
अर इ री भुजावा मे
बळ हो ।

अन्न
 मुठाने गू भी वेगा
 आगर परगार की
 माटी दगा
 द रो माया
 भारी गर मस्यो, है—
 बेटा-बोना गू
 भरघाटे पर गू
 घणसरा मिनरा
 नागा भूगा
 खलता फिर है ।
 कई इता भा नायक निसारपा
 के आपर मना म
 स्वारय रा भाठा पूज है
 अर ई जीवती जागती
 मूरत नै बार काढ दीनी ।
 अन्न ई र तन पर
 उतरघोडा गाया है
 अर पेट मे
 माग्योडी रोटी है ।
 अन्न यो न महाभारत है
 न भारत है
 वस भारत है ।



स्वाधीनता रो सुख

स्वाधीनता अर पराधीनता मे
भोत घणो फरक है
सुरग घर नरक रो आतरो है ।
पैली भारत पराधीन हो—
विदेशी शासक परजा नै लूटता
अर आपरो घर भरता ।

आज भारत स्वाधीन है—
 दही दामक परजा न मूर है
 अर आपरा पर भर है
 दामक पत्नी भी गुरग म हा
 अर आज भी गुरग म है
 परजा पत्नी भी नरक म हा
 अर आज भी नरक म है ।
 तो पछ स्वाधीनता अर पराधीनता म
 फरक काई रयो ?

साची क्यी है—
 भेड पर ऊन कुण छोड है ?
 अब भारत री जनता न
 भेड रूप छोड
 सिध रूप धारण करण। पडसी
 स्वाधीनता रो सुख
 भेड कोनी भोग सक
 यो आनद तो बनराज ई
 ले सक है ।



आजादी री ऊ ची गादी

बरवादी ता स' लीनी पण, आजादीनै कदे न छोडी
आजादी नै खोसणिया री, पकड मोवडी फेरी ठाडी
अथवा लडियो मरियो कटियो, पण वारी रै कदे न सामै—
थक कर ततो टेकी गोडी

ज्यू कर वरी सामै आया
हरख्यो पण ! तू ह्यो न कायो
भोपा ज्यू छाया छिन चढियो—
उफण्यो जोस वाया न मायो

देही तो अरपणु कर ली, मा घरनीनै देई माना
जे उण कानी विणी ज भाषया, पजाळी सी घाग बाप्या-
र, घरनी गत घममानी

जि दगानी नै मेल हषाळी
सामे चात्या मीत निमाणी
दूधा-पूना ताजा रागो—
मोभी वेटो ह्य घमराणी

रण भोमा म सूत दुधारी, वरी न सांडा कर नास्यो
खडो रयी पगमाड निसरडा आयो हूं बचना म आय्यो

का लें काळू पग नी रोप्यो
वुण रोप ? त जेडो कोप्यो
आजादी रा तू रखवाळो—
ओही बीज घरण त ताप्यो

पैलाने पैला ते काढया, स्वसता खिरता नी आजादी
सात आज तावळसर आयो, देखी हे जद आज बावळा —
आजादी री उची गादी ।



आजादी

मानव मानीजो ला कोनी ।

मिनखा रो लाजै मिनख पणो
घरती पर बोझ सवायो है ।
इण मा घरती रै माथ पर-
काजळ सो दाग लगायो है ॥

पशुप्रा रो आछो पशुपणो
बद पशु पणै नै लाज है,
म्है मिनख पणै नै लाज रघा
पशुप्रा मे नाम दुखायो है ।

पुरखा री लाज राखणी है ।

मत पडो लडो भूझो दुख स्यू
नर हो-वायर ना नाम घरावो थे
थे धीरज रा घणी घणा
नारा री पाथ मे आवो थे ।

मिनखा रो मोल मोळ मे है,

थे गिगता पडता आखडता
निठ नेड सी आ लाग्या हो
खाल्यो पीलो बस मौज करा
आ थे के ले भाग्या हो ।

ग्नि फिर गया रानां बीतै है
सूरज रो तेज गहघा फीका
बायरघो सोग मनाय है
ए तारा तर तर म्ठ गया
जीवण रो भास ! मीचनी आस

सत्या रो सांचो सत दूटघो
मिनखा र मू छ होव कोनी
व बीतै युग री बाता है
सत हो सत्या रो माथ मानवी
मू छा हाळा घणा होया—

दिन धोळ घाड मानवी री
घनमान लूटण म लागी
थे फाळ चूक ग्या लागो हो
म्है देख रधा भागा भागी—

मत धोळ फूलिया वणो घणा
धोळ पर दाग घणो आवै
मिनखा रो मान बढावण री
बाता रो ध्यान घणो आव

कुरवानी रो बलिदाना रा
कुण मोल चुकावण चाव है—
आयो है घिरतो बायरघो
थामो तो थमसी जाव है ।

वाळक सी हानी टाबर सी, आ हि द देसरी आजादी
आ_सोरी सी कोनी ल्हादी ॥



- श्री सावर दर्शिया

सुरक्षा के सन्दर्भ में

सुरक्षा कवच बन कर खट
 डनेक घाउट को भेदती
 घासमान की ओर मुह किये खड़ी
 प्रकाश रेखाओं के साथ
 जुड़े अस्तित्व को
 कब तक समझाते रह
 सिफ वातो से ?

इन दिनो आदमी
 पानी या दूध की जगह
 मिट्टी का तेल क्यों पीने लगा है ?
 क्यों लबी और लबी हो गई वे पक्तिया
 जहा नागरिको की विवशता का
 मजाक उढाया जाता है ?

देश के लिए काम आने वाला पैसा निगलती
ये सूअरनुमा आवृत्तिया
भामाशाह के वशजा की
यह गघाती नस्ल
कब तक जीवित रहने दें ?—
जो रेजगारी पिघलाती है
चवत्ती की
रूपये म बदलती रहती है ।
दिनरात—

अनाज भरे गोदामो पर
आउट आफ स्टॉक की
तस्खिया लटकाय रखनी है

पून नही हिम्मत चाहिए' के बराबर
रक्त दान दीजिये क पोस्टर पर
कीचड उछालते मस्तिष्को के कूतक
कब तक सुनते रह ?
और कब तक गुले रहने दें व मुह
जा जन समूह का मनोबल गिरान की
घफ़राह फनात है ?

मिम्बर की बर्फीनी राता म
घग म लग मिम्बर छाड कर
घधेरी गलियों म
पन्ना टन चाल नययुवक
साधारण धावारा कम है ?

मुनाफाखोरों की बढाई हुई
महगाई को लात मार
एक दिन का वेतन कटवाने वाले
कमचारियों के कंधे
सीमा पर युद्ध-रत सिपाहियों के कंधों से
कैसे मिले हुए नहीं हैं ?

हमारा एक मतव्य
एक विश्वास
एक स्वर
एक लक्ष्य
विफल बनाने वालों को
इतिहास जब माफ करेगा
तब करेगा
फिलहाल हम
हिसाब चुकाना
कब तक स्थगित रखें ?
-- --? --?-- --?



- श्री भरत ठयास

वाह रे म्हारा डोकरडा

'वा' न मा चिता धनी, धारो इव वेदो "ऊन" गयो
थे गया, धना बिगडयो सारो, म्हे लिख-लिख कर हारघा खरडा
रे वाह रे म्हारा डोकरडा ...

थे तो धारै जीवन नै, सीधो साधो जीकर अमर हुआ
पण गैल पून जो छोड गया बे घर मे पडघा रवै साया
य छाया ले न सकयो काई भी, इण धारी परछायी की
'ठाकर' बण कर ठसकै सारा, वारात सजी है नाई की
ये धान तो भगवान बणा कर, आप वण्या मव ससारी
दारू पोवै जूझा खेलै, या कहरघो 'पद्मो' पसारी
जो धारो 'लीक' छोडदी तो मर ज्यागा सब घरडा-अरडा
रे वाह रे म्हारा डोकरडा...



लारला पच्चीस वरस

चरम वै
वात्प्योडा
म्हारा
जिका जिया
म्हा—
भारत रा
दीन दुखी
आरत रा
ऊजळा
घणखरा
धू घळा
दीठपट माथे
जम्प्योडा
मटमैला सा'क -- --
उठता पडता
टोपा पसीने रा
टोपा रगत रा

भारत वै
लिलाड स्
भरता
खिण खिण
गतिमान !
देस रे
हरस रा
सोग रा
अणजाण्या
व वरस
घर घर
धूजता सा
तणता सा
दूटता
तिणखला ज्यू ।
(२)
जलम री

वंशीतारागं
 हाल ई
 सुणीज है—
 भेनम र पार
 जमना र पार
 हेमाळ र
 घर
 सिखरा माथ
 हम री सिलावा
 दीस है -
 टूटती
 मूरती रा
 दोनू हाथ कटग्या
 वीनस द मलो
 टूटथोड मिदर री
 खड बड
 थ्रेक मूरत जिमा
 पडो वा
 भारती
 भूली बिसरी
 सास्कृतिक
 गफलत म
 गुदळीज्योडी
 दोनू पसवाडा
 कटग्या हा
 हेममिला रा

अर
 गळ पग
 धाय दारू
 बगन र पटद
 पटग्या हा
 पटगो ही
 गरी माई ।
 जिरा बरोबर
 हई गरी
 शौर गरी ।
 (३)

गीघ वैठो कुचगतो
 माग र सिद्धर न
 रवतो रघो
 पिगळतो नित
 मुक्सेसी वा
 कास्मीरी घाटिया म
 रगतो तिरग चोर न
 घणो गरो लाल ।
 रगत सागी
 हिमसिला री माग मे
 जमग्यो हो थोडी ताळ
 राजनीतक
 जुवो कूटनीतक
 जमगी सतरज
 मो रा बण गया

पापों —
 विक गया मम्मान
 म्पागी
 वज्रपत्नी
 धिर गर् पाएरी
 मर
 हमा
 माइ चाट माची
 रा निया
 म्हा रो
 जवाहरमान !
 विष गया हाग्धा
 वना घर
 र्धा म्हे मर
 ।य किमडा दीना !
 ।र
 न्या खाधा
 प्रजगर नै जवाडा म ---
 तातीरिच्छक फोज
 म्हारी
 कारिया मे
 श्रीर
 वागो मे !
 हुय गया ही
 सरव
 सूनी

शीव माथै
 निमीरो
 वेमग्गो
 ए
 घेर माफन
 माव पीळो !
 (४)
 हूर्द र्गना
 फेर पाएरी
 म्पुद् रो
 जग् गीध वृग्ग्या
 घणा मरा पाव नै ---
 पूग्गातर चाल मू
 गीध नै टुग्गडा मिन्ग्या,
 पाग् गीव रै
 उदळना
 नित रयो पैरो ---
 सस्त्र भमरीकी मिन्ग्या
 सगत रा हुवता र्ग्या
 नित नुवा
 सत्र-परीक्षण
 बाल रो
 निसडा
 भयानक रुदर चैरा !
 हालता विक गन
 घर फेर

उडघा वै नैट ।
 अगनवरसा म घघरता
 पडण लाग्या जट ।
 कपट र वातावरण म
 सभ रोप्या म्है खडा
 त्याग अर बळदाण सागै
 अगनमुखसू जा भिडघा
 सस हो सम्मान म्हारो
 प्रगट हो बळदाण म्हारो ।

(५)

भले भगडासू थकयोडो
 पडघा पाकस्तान
 स य सत्ता री बघारी
 घणी थोथी सान
 कुतै री हाडी रयी
 रिमनी रिसानी घान
 दमन री हा पराकाष्ठा
 हूजती रयी भवर म
 अरथ भासा भेर री वा नाव --
 प्राण मोत्या मिरगल रा
 जुद्ध रै प्याम
 भूखिया वा भेडिया
 उठगो भारत
 बग भू रो बचावण
 सम्मान
 फौजबळसू राकसान

जा गढेडघा
 घर
 बगला दश रै
 वी मुगत रण म
 देम री रण मन्नी
 हो तोड नाग्यो
 विपम घेरो
 करघा हा
 परघाण ।

(६)

राज अर ममाज म हो
 व्यापतो व्यामोह
 घोर सक्क री घडी ही
 मायनो विद्रोह
 राजनीतक पुनरचना
 सगत रो नवरूप
 दळा म बटाग्या
 सुवारथ, ईसकसू
 पडघा आध रूप
 वदळत जुग री
 वदळनी चावनावा
 और जन री चेतनावा
 नव विचारा रो
 नु वो उदघोस
 नुव मूत्या रो
 हुयो प्राकट्य ।

मनावण व प्रत
 पिरतग्यावा
 वी प्रवचक
 वीस वरसा री
 कहाणी — —
 कठे समता !
 कठे खमता ! !
 अक हळचळ उठी
 आर्थिक वा
 पुनरचना
 नव प्रयोगा री
 समतभरी वी
 एक क्रिया री
 य गयी
 हवात ।
 'ष्ट्र जनमत
 । गयी जाग्रत
 और
 वीत्या दो दमक हा
 आत्मगलानी र अघारें म
 आपता सो
 हाफता सो
 गुण अर विदीण सो
 ी दप
 लळ रो बळो
 र उडीकयो

परीश्रत रो मप
 फण तण्या खडो है —
 हरण लागी धु ध
 चौत्कारा उठ रयो है
 हिमसिलावा धूजती जावै
 और नवयुग रो
 किरण रो जाळ
 भेदतो जावै विममता
 मद्र वधता चरण
 है थोडा सकं मे ।
 सजगता है
 राष्ट्र मानस मे
 और
 करवट ले रयो है
 जवान भारत — —
 लैर है
 उछाव री
 फेरती जाव
 पता वा
 राष्ट्र रथ मार्थ —
 वा है
 नव जागरण री
 फूठरी वेळा !

गांधी री लाडली

स्वतंत्रता प्राप्ति के पच्चीस वर्ष हैं
और—
मेरा बेचारा निस्सहाय देश है
जिमकी न निज भाषा है
न अपना बेश है ।
बच्चों का बहलाने के लिए
यह गांधी के 'सपने' बेचता है
किताबों में
स्वतंत्रता या आजादी' के अर्थ में
चारपाई' की जगह
बैठ पर लेट कर

'फ्रडम' देखता है

स्वार्थों में

गा बी ।

जिसने कहा था—

'हिंदी भारत की तो क्या ।

एशिया की राज्य भाषा हो सकती है'

के जनाजे पर

इंग्लिश का कफन डाला था इसने

उसकी आँखें बंद होते ही

यह निरकुश हो गया था

उसकी ममतामयी बेटी को

अनाथालय भेज

एक अंग्रेज की बेटी को

पाला था इसने

और आज तक—

उसे कुतर्कों के इन्जेक्शन लगाता

उपचमता

चुपकारता

सवारता

जवान करता रहा है

'हिंदी'

जब-जब भी आई ससद की—

चौखट पर

उसको इंग्लिश में भौंकने वाले

ब्रिटेन के कुत्ते से

कटघाता

विट्यागा
 घणमात करता रहा है ।
 श्रीर घात्र तक
 भारत की एक जगह जहा
 पचतास यथ की बंटी
 सान किस क बाहर
 सडक पर सानो है
 राष्ट्रपति भयन की स्यामिगी
 मम दरा पार की विसागिगी
 हो रही है
 गाधी ।
 मुझे श्रीर मर दश को क्षमा करना
 तेरी पुत्री आज
 सपने ही घर म प्रवासिनी हो रही है ।



चेतना री खतावणी

शे फाटी रो उजास
भोर रे सुपना ने चचेडे,
वीरी गोदी मे वंठो सूरजे टावर
चिडकल्या रे मूढ बोल
सुख भर नीद पौढणिया
अघार री खतावणी छोड'र
आगे आवो
अर धारा नु वा खाता खोल'र
दिन री वही मे दो आक बघावो ।
जुनी बात्या रा
विण्ड सरावण स्यू
यादा रा गुटका पीवण स्यू
ऊगते सूरज रे षोडा री रासा
किया यममी ?

सिद्ध्या रै विसरियोड सि दूर सो
 भोर रो मुट्टो भर उजाग क्रिया मिनसो ?
 सूरज रो अणदेखी करियां
 तावड री जाजम नी सांटी ज
 गहड पुराण बांचणिया स्यू
 जलम रा नारेळ नी बाटो जै ।
 नु वी पीढी रै होठा माथ
 टाकीजियोडा आखर
 नु वा अरथ चितेर
 पीढीया र आतर स्यू
 भासा री खल भाड
 अर बीन गैरी दिस्टी री
 रगड स्यू चिलकाव ।

कदास बुसबुसिजियोडा आखर
 मु ढो खोल नै की बोल
 तो जुगा र गू गै दरद री
 की पिछाण तो हुव
 पोली घरती माथ नाठियोडा
 गीता रा निसाण तो हुव ।

बखत री ब्याकरण रा
 अरथ बदळग्या
 जूना पडियोडा सवनाम विसेसण क्रिया
 थाक'र सूयग्या
 मानस री चीलख आख न
 गरा अरथ सूभ

आने रै आतरै स्यू
गैरो गोनी लगाव ।

बखत रै पाणी मे तिरतो इतिहास
गाताखोर ज्यू चिब्वी लगाय'र
मायना वात काढ लाव
अर बीन बवत पाणी म गलाय र
आपरा गाभा पैराय देवै ।

पण ममाणा रो पाहोमी
अघगावळो बखत

हालताई
नु वी जि दगी रा पगलिया
माडणा चावै

अर बूढी अगरहया
अगला टोपी मे समाणी चाव
वान क दो ।

थारै टाकी टाकणा री घडाई पूरी हुई
अव बखत र टाका क्यू लगावो ?

यही करती चेतना नै
पगलिया लेवण द्यो

गले बँवत बदळाव र
हुही क्यू लगावो ?

थारी बांचोजियोही पोथी न
उयळना रो

नु वा आखरा री पोही क्यू पकडो ?
जोवत सराध करणा हुवै तो करत्यो
बना घोही रा गीत अवे कठे ?

रळी रा गुटका पिया
वा सागी मिठाम वठ ?
चेतणा म पीढ्या रो आतरो है
अबै इन कुण पाट ?
सुरग विसाइ लवण हाळो बोगरी
जि दगी रा नु वा धान किया साट ?
बिखरत मळ मारुं क्यू फिगरावा ?
खिडत खेल म क्यू बिलमावो ?
बखत री एक ठोकर खाय र
आ बोदी चौपाळ ढ जासी
इरी वणघट मिट जासी
बोखी काण्या र ढळता किस्ता र'जासी ।



पर इतना सस्ती नहीं खून से सिंची हुई ये आजादी ।
 वेवाया का दिल चीर धार से खिंची हुई ये आजादी ॥
 शत्रुना क जबड़ा म से लाई जाती है आजादी ।
 मस्नक का धोल चुका करके पाई जाती है आजादी ।
 पूरा का पूरा राष्ट्र जाग कर करवट जभी बदलता है ।
 तब जाकर दुनिया म कोई सा बगला दश ज मता है ॥

जब मागो का सि दूर जाय तो धरती सि दूरी होती ।
 जब मा बहिना का प्यार जाय तो कुरानी पूरी होती ॥
 जब फौलादी सीन हाते तो स्वय मुट्टिया तन जाती ।
 जब राजू शीशा पीते हैं तो कई कानिया हो जाती ॥
 फौजी नगी तानाशाही खुद फिरती जान बचाने को ।
 पद्रह करोड बाजू उठत जब जब आजादी लाने को ॥

जिस समय शक्ति क चेहरे पर नूतन रौनक चढ आती है ।
 उस समय दरि दो के खानिर लाखों बर्जे खुद जाती है ॥
 जब जब ऐमा माहीन बने, पत्थर भी आग उगलता है ।
 तब जाकर दुनिया म कोई सा बगला दश ज मता है ॥

जय बगला जेग जन्मता है, दानवना स्वय चरमराती ।
 तानाशाही धान फौजी सामन का फासी लग जाती ॥
 उस समय दरि दो क सार अग्मान सिमकिया भरते हैं ।
 मुनी पत्रा धान जीवन की भीख मागने फिरते हैं ॥

जो खून शहीद बहाते, उमका पार नहीं हो सकता है ।
 मा बहिना का बलिदान कभी बकार नहीं बन सकता है ॥
 ऐसा कुर्बानी करन पर ही तो ये जगला देग बना ।
 लाखों लोगो के बलिदानो का खून सना परिवेश बना ॥
 पदह कगेड मुट्टिया तनी, शोषण साम्राज्य मिटा डाला ।
 जब पूव दिशा के मानचित्र स पाकिस्तान मिटा डाला ॥
 जब जब ऐसा भूचाल उठे भट्टी म भाव घघकता है ।
 तब जाकर दुनिया मे कोई मा बगला देग जमता है ॥

लो नौ महिनो की रात गई नूतन प्रभात उग आया है ।
 ढाका का है सौभाग्य आज फिर बगला ध्वज लहराया है ॥
 सपने मुजीब के सत्य हुए, वे सपने थे आजादी के ।
 वे सपने अब्राहम लिंकन के, वे सपने थे गांधी के ॥
 इतिहास बन रहा था उस दिन जत्र फौजी तपण करते थे ।
 वे एक लाख पाकिस्तानी जत्र आत्म समर्पण करते थे ॥
 वे एक लाख शैतान जि होने भीषण नर सहार किया ।
 वे एक लाख हैवान जि होने निर्दोषो पर वार किया ॥
 ललनाओ की अस्मत् लूटी अपना मुह काला जहा किया ।
 उन एक लाख दरिदो ने छोटे बच्चो को भून दिया ॥
 लेकिन इतिहास साक्षी है, उन सवने घुटने टेक दिये ।
 सोलह तारीख दिसबर को हथियार सामने फेंक दिये ॥
 जब अत्याचारी दहल जाय, शोलो का जोश दहकता है ।
 तब जाकर दुनिया मे कोई सा बगला देश जमता है ॥

इसलिये नवादिन राष्ट्र तुम्हारा कीटि कीटि अभिनदन है ।
 पचपन करोड भारत वासी मिलकर करते अनिवादन है ॥
 यह जीत हुई मंदिर मस्जिद गिरजाघर श्री गुहृदार की ।
 यह जीत हुई है राम रहीम ईसा अल्ला के नारे की ॥
 यह जीत पूण मानवता की ही हमे दिखाई देती है ।
 यह जनता की आवाज विश्व म साफ सुनाई देती है ॥
 यह सच्चाई सच्चाई है जनता का निणय पूरा है ।
 अब सत्ता मदा के निये पाक आघा है और अधूरा है ॥
 जब जब जनता में ज्वाल उठे, ज्वालामुखी भाग उगलता है ।
 तब जाकर दुनिया म कोई सा बगला देश ज मता है ॥



• श्री दीनदयाल ओझा

साच री जोत

कर सक्ई काई अधेरो जगत मे
साच री जे जोत हिवडै मे जळै ।

पग वूड रा काचा हुवै है वावळा
नाव कागद री तिरै ना नीर मे
वात कैवण मू सरै नी कामडा
मोत वो जो काम आवै पीड मे
जिण हृदय भरियो सुधारो कळस तो
गरल उण हिवडै बता वयू कर फळ ।
कर सक्ई काई अधेरो जगत मे
साच री जे जोत हिवडै मे जळै ।

चदण भुजगा सग रव रात दिन
भावना खुन री कद छाड नही
लाख दु स सब सदा ही सत जण
पण सुपथ सू पग कद मोड नही
जिण हृदय सावण वरसियो हेत रो
ठीड लू वा बता क्यू कर पळे
कर सक काई अधेरो जगत म
साच री ज जोत हिवड म जळ ।

अज्ञान री वातां प्रता कद तक रैव
जिण हृदय म भाव प्रगट ग्यान रो
कुण कर अपमान आय मनख रो
जिण घरा है भाव सुभ स मान रा ।
सद्भाव रा सागर जठे भरिया पडघा
दुर्भायना उण ठीड जा कर क्यू कर ढळ
कर सक काई अधेरो जगत म
साच री ज जान हिवड म जळ ।

क्यू विलखना तू फिरै है वावळा
हत री नशिया बवान भाव सू
रत रा घाग न खाली त्व तू
घार मुख गरिता निरख तू भाव सू
त्रिण ठीड मळ चार नित रितुराज रा
उण ठीड न पनभड बता कीकर छळ
कर सक काई अधेरो जगत म
साच री ज जान हिवड म जळ ।

अभिनव शृंगार

पग पग पर मुझका मत रोको ठुकराओ
वतमान के जीवन का तो मैं अभिनव शृंगार हूँ ।

इस दुनियाँ की घरती को जीवन देने हित
मैंने सुख से गरत पान स्वीकार किया
पथ पथ पर बिखराने फूनी की कलियाँ
जगनी के गूलों का नित शृंगार किया
जो भर अब सहने दो बाधा मत डालो
मैं उजड़े पथ का विसराया प्यार हूँ
पग पग पर मुझको मत रोको ठुकराओ
वतमान के जीवन का तो मैं अभिनव शृंगार हूँ ।

गभी दुःखा का बाधा घायु की रज्जु ग
इगोनिग कि काई बोन न विगराए
छिया लिया दुःख माय । मैं दा घागा
इगोनिग कि कोई बूट न गिर पाय
जलने दा मुक्को मत रोको ज्यासा म
अधियागे राहा का मैं आधार हूँ
पग पग पर मुक्को मत रोना ठुकराओ
वतमान न जीवत का ता मैं अभिनव शृंगार हूँ ।

दुःख की सौगातें भीतर म ही गजा गजा
वटल म सुख की सौगात उपहारी है
प्राणो को सट्ट की राहों म पयरा
वदल म जीती बाजी निन हारी है ।
वहने दा मुक्को मत रोका इन धारा म
मैं दुखियारा गतिया का अभिसार हूँ
पग पग पर मुक्का मत राको ठुकराओ
वतमान के जीवन का तो मैं अभिनव शृंगार हूँ ।

खूब सुनी बात धरती की जीवन भर
पर कोई भी आज न मरी सुनता है
विखरा नान बटोरा भोली म कण कण कर
पर काई ना आज हृदय म ही गुनता है
मुक्क भटकन दो राहो म बघन मत डाला
बिसराये सत्यो का मैं सुख मार हूँ
पग पग पर मुक्को मत रोको ठुकराओ
वतमान क जीवन का ता मैं अभिनव शृंगार हूँ ।



र 'मनुज'

घटनाओं के फल

अहमता के भीषण
ज्वालामुखी के मुख से
फूट पड़ी निगूठ परिभाषाओं
की ज्वाल
ज्ञान के कीचड़ से, दब गई
मैंगन की वृल द आवाज
और
उठा ऐसा बवाल
जल गई
राख की ढेरी मे
सत्यता की टाग

प्रागन छोड़ कर
 सुहागन गमा ने किया
 अग्नि स्नान
 और
 सिर पर मूढ हिमालय
 एठ गया अकड मे
 निबु ड शान म
 चटवती चिगारियो स
 पुरातन विश्वास
 मृत सशया के
 इगारा से हो गय
 विस्मित
 समाधान का सामान ल
 थके मादे चि तन का
 कारवा
 हो कुण्ठा मे अमित
 पहुचा सजाने, सवारने
 बसाने
 महाज्ञान की
 वस्ती
 अस्त व्यस्त घरती तल पर
 नव कोपल से
 उग गए
 पराजित खण्डहर ।
 शाश्वत जग के इन सूचको
 को दिया नाम

सम्पत्ता नश्वर
चिन्ता में नेप, थे जो
अहमता के
रक्षण
सिमटकर ले लिया
उन्होंने
थोथा निणय
युगदशन का
मगर
ये सभी सम्भावनायें हैं
घटनाओं के
फल
जो
आज भी है
श्रीर है
बल ।



समै भागतो जावै

निमघो निमघो
जळ चानणो
बिजळी आळ खम्भा माथे
सडक पडी सरणाट
मिनख रो कोनी दाख जायो जाम
मिनख पण रो छूट रयो है
मोत्या जडी लगाम
अडोळो जीवण आळो घोडो
भाग इगगी बिणगी
दिशा विसरग्यो
दशा विगडगी
अर
विगडग्यो भीट तत्र रो घाण
मिनख न मिनख खावण न ललचावै
कीकर आवै पाण
कापतो सम भागतो जाव
दिशावा सगळी थाम न पाव ।



• श्री शिवराज छमाणी

मायड-भासा रै सिरजणहारा रै नाव

पळ पळाट करता सोनत्रिया
प्राखरा माय
मायड भासा रा सिरजणहारा रो नाव
इतिहास रै ऊजळ पाना माय
माडीजे

इं
सिरजणहारा माय
सोवणा सपूता री बेलि फळ फूने
प्रिध्वीराज री
बेलि क्रिस्न रुकमणी री'
सूयमल्ल मीसण

दुरसा आढा अर कृपाराम
राजिया रा दूहा'

अर

हाला भाला री कुण्डलिया'

अर

'बाता ह्याता सू भरचोडा
भडार अखी र सी

आ मायड भासा

जयमल, दुरगा, पत्ता

परताप अर पत्ताधाय

मीरा अर करमा रै

सनेव सू सीच्योडी

सूवटिया मेरिया कुरजा

अर

पपइया र लोक गीता रा

सुरली घुना सू सवारयोडी लाग

अळगोज रो तान माथ

माड सिरखी, राग

मीठी मिसरी सी आवाज

जिन्ही च्यानणी रात म सुवावणी लागै

मोरळा वरसा सू

भामा री गगा वै वै

जिकी ववण दो

छीछालदर करण वाळा

छछू दरा न

सरप वाळो फण

अक्स दोखमी
 कुरसी रँ चिपकयोड चीचडारँ—
 माय
 डा डी टी पोडर छिटकाइजसी
 कमत्तार भीया, जून किल री
 तरिया ढहमी—
 पायी परम्परावारा लेवडा
 उखडसा
 लेखण री घारा
 निरमळ भावा रँ सागी
 ववनी रसा
 इय घारारँ माम
 कद अडियळ रोडा
 अटक्याअर अटकमी ?
 लेखणी रा स्याही
 मत सूखण दो
 सुतत्तर भावसू
 चाल ज्यू ई चालण दो ।



है सुन्दर सतार

नित राजस्थान जियो

सुख जियो हजार बरस खुशी ।सू राजस्थान जियो
मे जियो देसरा मिनख श्रीर भावी मतान जियो
आ जमी जियो, घाकाम जियो अ दरखत-रू ख जियो
मन म घोरा री घग्गी पर मरण रो भूख जियो
नित छाछ जियो, नित जियो बाजरी भुक भुक खेत जियो
ऊठा बैल्या रे हेठरी म्हारो ऊजळी रेत जियो
बूकू बेसर रे रग मे, डूवी भाई बीज जियो
रुखारी हीडा पर बैठी मावण, री तीज जियो
इण माघ फाग रे महीणा मे होळी रो राग जियो
जुग जियो पामचो मखण रो, डोलरी पाग जियो

जय वर्मा, राजस्थानी कवि

जागै सोयो ज्ञान जी

भारत रो सोनलियो सूरज, सिकरा चढतो जावैलो
समता री गोदी मे पळियो, समता रा गुण गावैलो
मागण मायड स्यू भी बेमी अण घरती नै माना जी
अण्हतो आ लाड लडावै सगळा मन मे जाणा जी
ने आगळ भी घरती म्हारी, दुसमी छीन न पावैलो
कूडो हक जताणियो जुल्मी बिना मौत मर जावैलो
भी घरती रो मोल आकलै दुसमी रो श्रीकात नही
रगत सीच म्है बेल बघाई, कोरी थोथी बात नही
यार यार हाथा स्यू जद, भिलकै वण जाव कधी
चावै जितनो नाण मारलै छूट न पावै वा' कधी
मनरगी किरणा ज्यू घुळकै, सूरजिये मा खो गी रे
बीया हो मोकळी जातिया, भारत भेळै होगी रे
सेळ भेळ री डू गो खाई रळमिल मगळा भरदेस्या
हि डू, मुस्लिम, सिक्ख, इसाई, खुद नै भारतीय कैस्यां
-यारा-यारा वण्या देवरा, -यारा हो भगवान जी
पळै भावना "लोह एकता", जागै सोया ज्ञान जी



दो कवितावा

[एक]

निरभ्र आकाश
दरबतौ घरती
उल्टी पडी पेट की मटकी
कहते हैं अकाल पडा है
अकाल पडा ! अकाल पडा ! ।
अच्छा
बडी प्रतीक्षा बाद
स्वाग का समय मिला
आओ
तुम भी आओ
हम सभी मिलकर
अब देवताओं का अभिनय करे
इतिहास रचें



[दो]

पहुचना होगा
किसी एक शिखर पर
जिदगी या मौन
किसी एक के घर पर
निरयक है
प्यार या परमात्मा
याने आदमी की जात ।
अनिणय के प्रदेश में
परिभाषायें खो जाती हैं
निणय की स्फटिक शिलायें ।



स्वाधीनता रजत-जयन्ती वर्ष

पचचीस बरस पहल हमने
की विदा गुलामी का दरान ।
है बात बड़ी हम मना रह
यह आजादी का रजत सान ॥

इस काल म हमन भारत का
मेहनत से पूब सवारा है ।
उत्पादन और बढाने म
अत्र ऊचा हाथ हमारा है ॥

जो कुछ अब तक हम कर पाये
व काम हैं कोई कम नहीं ।
भारत से फिर दराने का
रहा दुश्मन मे भी दम नहीं ॥

हम खड़े हमारे पैरो पर
यह बात गव स कहते हैं ।
मुहताज नही हम श्रीरो के
चाहे जो सुख दुख सहते हैं ॥

पर अभी बहुत कुछ करना है
गाया, स मुक्ति पानी है ।
समता का युग लाने खातिर
निधनता हम मिटानी है ॥

जो आजादी का लाभ उठा
स्वारथ मे अघे हो चूके ।
दो नम्बर का घन जोड़ जोड़
फिर भी लाखों के हैं भूखे ॥

उन इने गिने कुछ लोगो के
चागी के हो गये महल खड़े ।
जब कि भारत के कोटि सुत
नग भूखे हैं आज पड़े ॥

उनके मन मे कटु पीडा है
धुआ भी है, चिनगारी है ।
भुलसाने वाली लपटें है
जो नही किसी से हारी हैं ॥

जिनका जी सक्ना दूभर हो
उनको मरने से बचा डर है ।
बढ़ गया देश उनके बल पर
जिनके ना घरती पर घर हैं ॥

श्री बुलाबीदास बायरा गंग श्री धनगुणगंग पुत्रोत्थ
गूरगागर क पाग बीकानेर (राज०)

श्री भवरलाल छजलानी म० पो० जियातरा (बीकानेर)

श्री भवरलाल सुयार भ्रमर'

ईगाह बागी क घर बीकानेर (राज०)

श्री भरत व्यास भरत भवन

पू रूढ़ रोड बिन पाले, बम्बई ५५

श्री भवानी शंकर व्यास 'चिनोद' य० घ०, पाट उ० मा० विद्यालय
बीकानेर (राज०)

श्री मकबूल अहमद 'अमिताभ' सुझाग का मा स्ना फट बाजार,
बीकानेर (राज०)

डा० श्री मनोहर गर्मा गान्धुस मन्वृत विद्यापीठ कवाटर
रानी बाजार बीकानेर (राज०)

श्री मालच द खडगावत बीकानेर (राज०)

श्री मूलच द 'प्राणश' चौमूटी गजनेर रोड बीकानेर (राज०)

श्री मोहन आलोक १४१ एच० गक, श्रीगगानगर (राज०)

श्री मोहम्मद सदीक राज० सिटी उच्च माध्यमिक विद्यालय
बीकानेर (राज०)

श्री योगेश्वर 'मनुज' राजस्थानी

द्वारा श्री अटल दीपक, मू घडा ववाटस
गगागर राड बीकानेर (राज०)

श्री रामदेव भाचाय अग्रजे त्रिमाग

गजकीय मन्विद्यालय, करोली (राज०)

श्री रामनाथ व्यास 'परिकर'

सहकारी प्रगतिश्रम मन्विद्यालय,
वृत्र विनास मन्स, कोटा-१ (राज०)

श्री बल्मेश दिवाकर

रतनबिहारी जी पाक के सामने,
बीकानेर (राज०)

श्री प० विद्याधर शास्त्री

सपादक विश्वभरा नागरी भडार,
स्तेगन रोड, बीकानेर, (राज०)

श्री विगनलाल 'मतवाला'

सुधारों की बही गुवाड बीकानेर (राज०)

श्री गभूदपाल सकसेना

एजूकेशनल प्रेम फड बाजार,
बीकानेर (राज०)

श्री शिखरचन्द्र कोचर

धवकागप्राप्त जिला एव मत्र वायाधीन
कोचरों की गुवाड, बीकानेर (राज०)

श्री गिव पाडे बीकानेरी

हनमान हत्या, बीकानेर (राज०)

श्री गिवराज छगाणी

नत्यूमर नेट के घदर, बीकानेर (राज०)

श्री श्रीकृष्ण विशनोई

ध० घ० जन उच्च माध्यमिक विद्यालय
बीकानेर (राज०)

